खरतरगच्छ की महान् विभूतिदानवीर सेठ मोतीशाह

[लेखक—चाँदमल सीपाणी]

मूर्तिमान धर्मरूप संघपति स्व० सेठ मोतीशाह ने धार्मिक संस्कार के बल पर प्राप्त की हुई लक्ष्मी का उपयोग रंग-राग में या संसार के क्षण-भंगुर विलासों में नहीं करके, आत्म श्रेय के अपूर्व साधन सम, स्वपर का एकांत कल्याण करनेवाले मार्ग पर उपयोग किया। स्व० मोती शाह ने गृहस्थ जीवन में जैन शासन की प्रभावना के तथा जीवदया आदि के अनेक सुन्दर कार्य अपने अमुल्य मानव जीवन में पुरुषार्थ पूर्वक आत्मा का ऊर्ध्वीकरण कर अपने जीवन को सफल किया।

बम्बई के श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ तथा गोडीजी पार्श्वनाथ के मंदिरों को देखकर, सहसा मोतीशाह सेठ को धन्यवाद दिये बिना नहीं रहा जाता। इसके सिवा प्रति वर्ष कार्तिकी-चैत्रीपूर्णिमा पर सम्पूर्ण बम्बई की जैन जनता भायखला के श्रीआदिनाथ मंदिर पर जाती है। यह देवालय व दादावाड़ी सेठ मोतीशाह ने ही बनवाये और इसके आसपास की विशाल जगह जैन समाज को दे गये। इसी प्रकार बम्बई पांजरापोल के आद्य प्रेरक-आद्य संस्थापक और मुख्य दाता थे। उनका नाम आज भी लोग दयावीर और दानवीर के रूप में स्मरण करते हैं। पांजरापोल को तन, मन और धन से सहयोग देकर अमर आत्मा सेठ मोतीशाह आज भी जीवित हैं। उस विशाल पांजरापोल का प्रत्येक पत्थर और ईंट उनके जीते जागते नमूने हैं।

केवल बम्बई में ही नहीं सम्पूर्ण भारतवर्ष के आबाल वृद्ध नर-नारी और विदेश से आनेवाले पर्यटक जिसकी मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हैं ऐसी श्री शत्रुंजय पर की "मोतीशाह सेठ' की टूंक यहाँ याद आये बिना नहीं रहती। शाश्वतगिरि पर गहरी खाई को पूरकर, जिस मङ्गल धाम का निर्माण किया वह लाखों आत्माओं की आत्म कल्याण को-जीवन-सफल करने को-लक्ष्मी मिली हो तो ऐसे प्रशस्त मार्ग पर खर्च करने को प्रेरणा देने को मोजूद है। इसको देखकर कहे बिना नहीं रहा जाता कि सेठ मोतीशाह चाहे देह रूप में न हो, परन्तु ऐसी अद्भुत कृति के सर्जकरूप में अमर है।

सेठ मोतीशाह में दान का गुण असाधारण था। विक्रम को उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में बम्बई के जैन समाज में जो जागृति व प्रभाव फैला उसमें उनवे यश का बहुत बड़ा श्रेय इन्हीं को है। कर्जदार के रूप में जीवन यात्रा को शुरू करनेवाले व संवत् १८७१ में सारे कुटुम्ब में अकेले रह जानेवाले जिस व्यक्ति ने दानवीरता के जो अनेक शुभ कार्य किये हैं, उसकी राशि अटठाईस लाख से भी ऊपर जाती है। इसमें सबसे बड़ा काम जिनमें उन्होंने धन व्यय किया वह है पालीताना के शत्रुंजय पर्वत पर मोतीव-सहि टूंक का काम। इस कार्य के निर्माण में ग्यारह लाख एवं उनकी आज्ञा-इच्छा के अनुसार प्रतिष्ठा महोत्सव में सात लाख सात हजार मिलकर कुल अठारह लाख सात हजार खर्च हुआ। दो लाख रुपया बम्बई की पांजरापोल के लिये खर्च किये। इनके सिवा नीचे का वर्णन खास ध्यान देने लायक है। यह सब उनकी धर्म भावना, अहिंसा-मय हृदय और तत्कालीन जनता को आवश्यकताओं पर उनको तत्परता को बताते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूलेश्वर:—कुंभार टुकडा के चिंतामणी पार्श्वनाथ देहरासर की प्रतिष्ठा सं० १८६८ के दूसरे वैशाख सुद ८ शुक्रवार के दिन सेठ नेमचन्द भाई ने कराई और उसके लिये रु० ५००००/- दिये।

भींडी बाजार :—शान्तिनाथ महाराज के देहरासर की प्रतिष्ठा सं० १८७६ माह सुद १३ के रोज हुई, उसके लिये रु० ४००००/- दिये।

कोट बोरा बाजार :—शान्तिनाथ महाराज के देहरासर की प्रतिष्ठा सं० १८६५ माह बद ५ के दिन हुई उनकी प्रतिष्ठा के लिये और देहरासर के निर्माण हेतु उनके कुटुम्ब ने दो लाख रुपये खर्च किये। सेठ अमोचन्द जिस जगह रहते थे और जिसके पास शान्तिनाथजी का मन्दिर है वह वास्तव में उपाश्रय था जिसे उनके बड़े भाई नेमचन्द ने तीन हजार रुपये खर्च कर बनवाया था। पीछे और जगह लेकर वहाँ नेमचन्दभाई ने एक लाख और खर्च कर मन्दिर बनवाया। प्रतिष्ठा और निर्माण में कुल दो लाख खर्च हुए।

मदरास की दादावाड़ी की जमीन खरीदने और निर्माण हेतु रु० ५००००/- सं० १८८४ में दिया।

पालीताना की धर्मशाला के निर्माण में रु० ८६,०००/- खर्च हुए।

भायखला की दादावाड़ी :- मन्दिर को जमीन, निर्माण व प्रतिष्ठा में० (सं० १८८५ मगसर सुद ६) दो लाख रुपये खर्च किये।

बम्बई गोड़ीजी के मन्दिर की प्रतिष्ठा सं० १८६८ के वैसाख सुद १० के दिन हुई जिसमें पचास हजार रुपये दिये।

पायधुनी के आदीश्वरजी के मन्दिर को प्रतिष्ठा सं० १८८२ के ज्येष्ठ सुद १० के दिन हुई। उसको उछामणि में पचास हजार की बोली बोली।

कर्जदारों को छूट-अंत समय नजदीक आया जान जिन कई अशक्त लोगों में रुपया लेना था उनको कर्ज मुक्त करने के लिये एक लाख रुपया छोड़ दिया।

इन सब का योग २८,०८,००० अट्ठाइस लाख आठ हजार होता है।

इस मोटी रकम के अलावा छोटी-छोटी रकमें तो कई थी जिनका कोई हिसाब नहीं। बम्बई की कोई चन्दा-पानडी ऐसी नहीं होती थी जिसमें उनका नाम न होता हो। इस प्रकार की रकम भी कई लाख है। आप प्राय: सब दान सेठ अमीचन्द साकरचन्द के नाम से ही देते थे और इसी में अपना गौरव समझते थे।

इनका रहन-सहन बिलकुल साधारण नहीं था। सिर पर सूरती पगडी और शरीर पर बालाबंधी केडियू लम्बो कडचलो वाला पहनते थे।

सं० १८५५ में सेठ मोतीशाह के पिता की मृत्यु के बाद उनकी उत्तरोत्तर उन्नति होती गई। इसके बाद सारे जीवन में धन सम्बन्धी दुःख तो इन्होंने देखा नहीं। उनके ग्रह सं० १८८० से तो और भी बलवान हो गये। कुंतासर के तालाब को पूरने के समय से लेकर के अंतिम तक दिनोंदिन बलवान ही होते रहे।

मोतीशाह सेठ का अपने मुनीमों के साथ सम्बन्ध कुटुम्बी जनों के समान था। उनको यही इच्छा रहती थी कि उनके मुनीम भी उनके जैसे धनी बने। मुनीमों को अच्छे बुरे अवसरों पर उदारता पूर्वक मदद करते। सेठ मोतीशाह के मुनीम लक्षाधिपति हुए हैं, इसके कई उदाहरण मौजूद हैं। उनको टूंक में उनके मुनीमों ने मन्दिर बनवाये हैं। उनके यहां अधिक कार्यकर्त्ता जैन थे। इसके अलावा हिन्दू व पारसी भी थे। सेठ मोती शाह का जैन, हिन्दू व पारसी व्यापारियों व कुटुम्बों के साथ भी अच्छा सम्बन्ध था। इनमें सम्बन्धित जैनों ने मोतीशाह टूंक में देहरासर बनाये। हिन्दू व पारसी कुटुम्ब भी इनके प्रत्येक कार्य में हर प्रकार की सलाह एवं मदद देने को तैयार रहते थे। जिस समय उनके पुत्र खेमचन्द भाई ने पालीताणा का संघ निकाला तब सर जमशेदजी ने एक लाख रुपया खर्च किया यह उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण घटना है। इससे ज्ञात होता है कि परस्पर सहकार व सम्बन्ध किसप्रकार हृदय की भावना से निभाया जाता था। यही कारण था कि सेठ की मृत्यु के बाद पालीताणा संघ व प्रतिष्ठा के अवसर पर अनेक लोगों ने सहयोग दिया। उनके पुत्र खेमचन्द भाई तो एक राजा की तरह रहे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

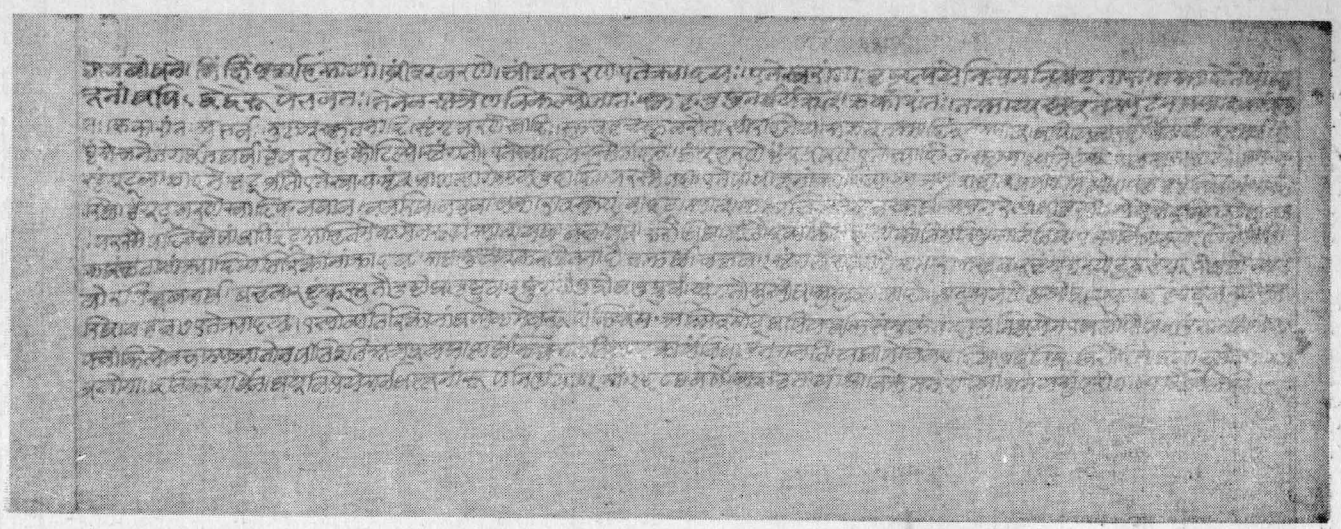

महोपाध्याय कविवर समयसुन्दरजी की हस्तलिपि

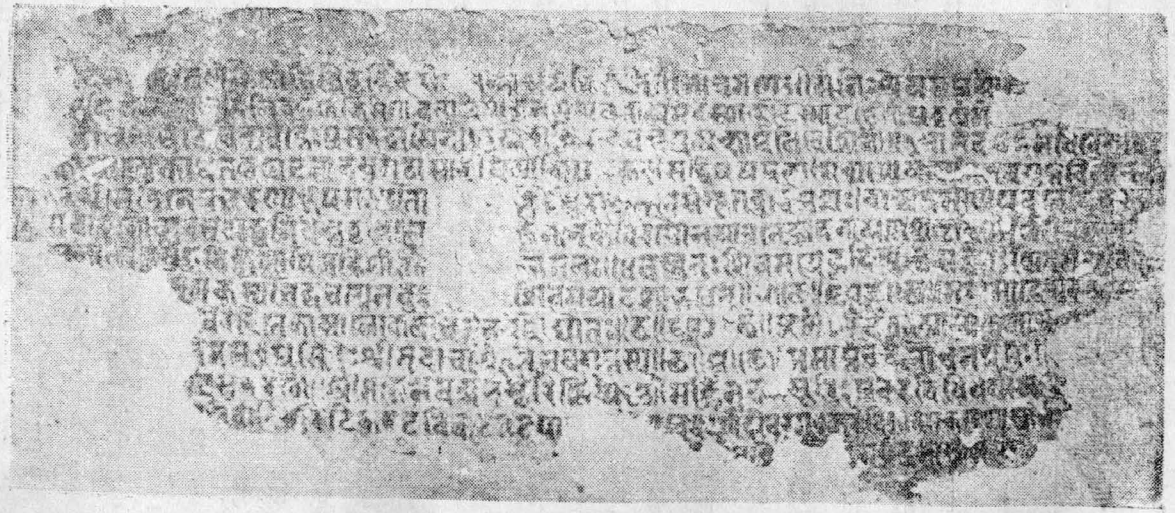

मणिधारी श्रीजिनचन्द्रसूरि लिखापित कागज की प्राचीनतम ध्वन्यावलोकलोचन का अन्तिमपत्र

Jain Education International
For Private & Personal Use Only
www.jainelibrary.org

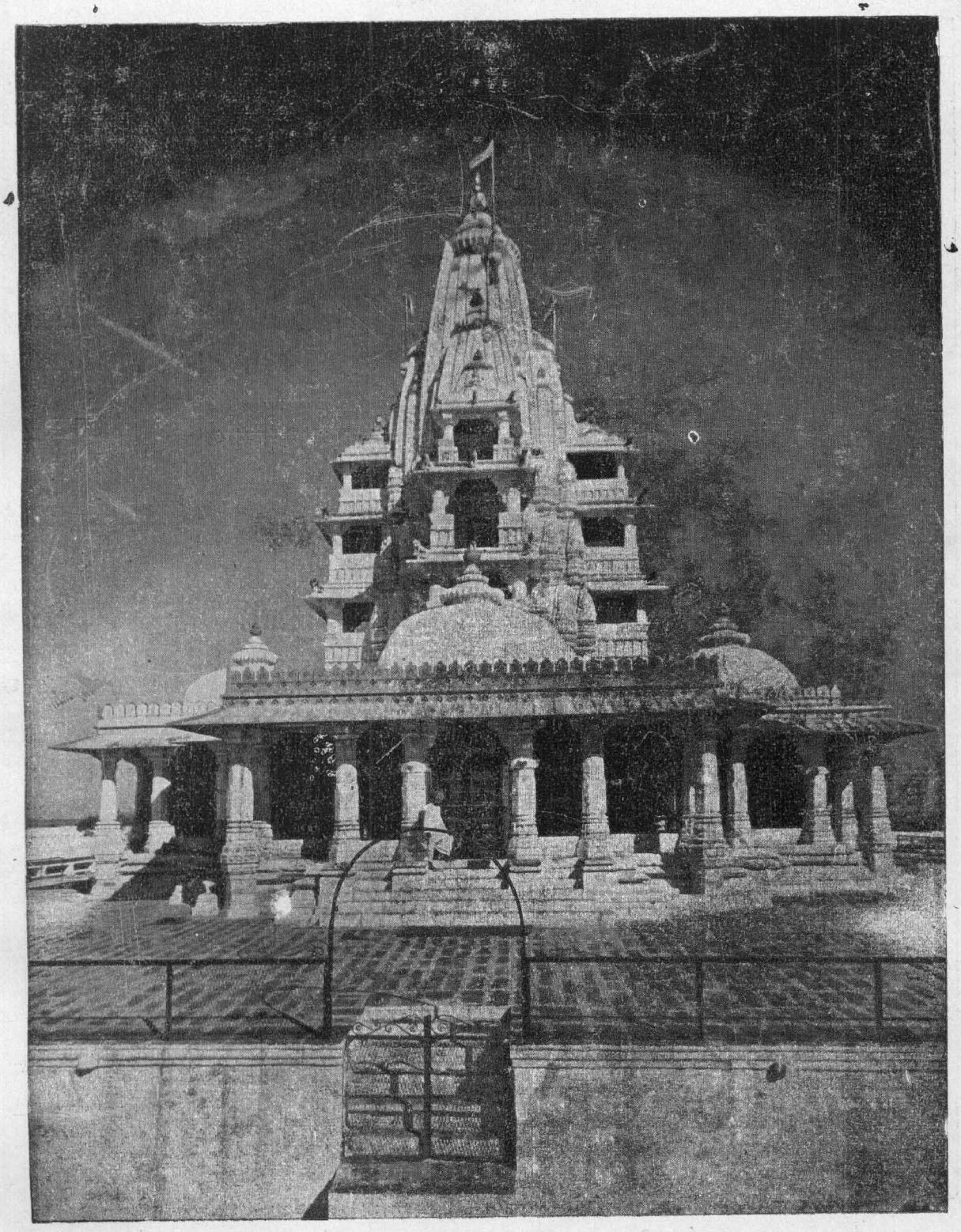

श्रीभानाजी भण्डारी कारित पार्श्वनाथ जिनालय, कापरड़ाजी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

खरतर गच्छाचार्य श्रीजिनचन्द्रसूरि प्रतिष्ठित स्वयंभू पार्श्वनाथ, कापरड़ा तीर्थ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

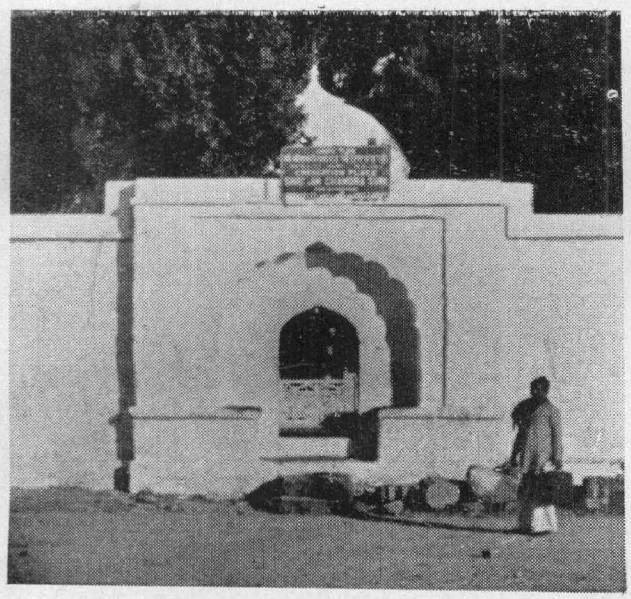

प्रवेश द्वार, दादाबाड़ी महरोली

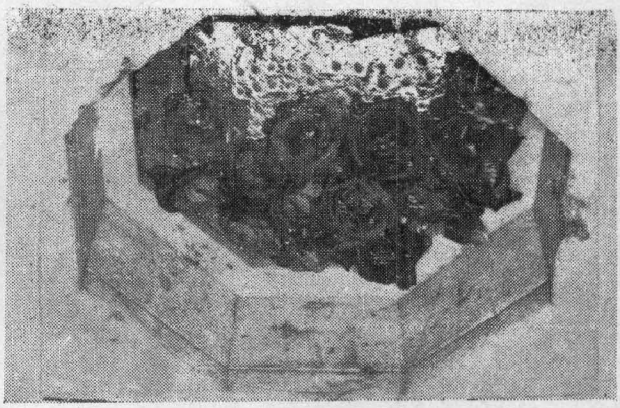

मणिधारी पूजा स्थान, महरोली

मुनि श्री उदयसागरजी, प्रभाकरसागरजी

प्रवर्त्तिनीजी श्री प्रमोदश्रीजी

विदुषी आर्याश्री सज्जनश्रीजी आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org